

## राज्य, मनुष्य और सरकार पर अरस्तू के विचार

### परिचय

राजनीति विज्ञान विषय राज्य, संविधान, नागरिकता, कानून और सरकार जैसी अवधारणाओं की प्रकृति और महत्व पर सवाल उठाकर विकसित हुआ है।

राजनीति विज्ञान के पिता के रूप में प्रसिद्ध अरस्तू ने इस विषय की नींव रखी थी। इस ब्लॉग में आप राज्य, संविधानों के वर्गीकरण और सरकारों के चक्र के बारे में उनकी समझ के बारे में पढ़ेंगे।

### अरस्तू: राजनीति विज्ञान के जनक

ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बीच अंतर करने वाले पहले व्यक्ति अरस्तू थे। उन्होंने मौसम विज्ञान, काव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, जीव विज्ञान, नैतिकता, प्राकृतिक इतिहास, सौंदर्यशास्त्र, भौतिकी, बयानबाजी, तत्वमीमांसा के बीच अंतर किया और इन विषयों पर विस्तार से लिखा भी।

उन्होंने न केवल राजनीति विज्ञान की आधारशिला रखी बल्कि इसके विस्तार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। **"राजनीति", "नैतिकता" और "वाक्पटुता"** उनकी कई रचनाओं में से कुछ हैं जो कानून, समानता, न्याय आदि के सवालों पर चर्चा करती हैं।

अरस्तू के अनुसार, राजनीति विज्ञान एक मास्टर विज्ञान है। वह राजनीति विज्ञान को एक मास्टर-कला के रूप में श्रेय देता है क्योंकि, अन्य विज्ञानों के विपरीत जो एक लक्ष्य के साधन के रूप में काम करते हैं, राजनीति विज्ञान अपने आप में मानव अस्तित्व के लक्ष्यों से संबंधित है। इस प्रकार, अरस्तू ने राजनीति विज्ञान को मानव अस्तित्व के साधन के बजाय लक्ष्य के रूप में देखा।

अपनी पुस्तक, द निकोमैचेन एथिक्स में, अरस्तू लिखते हैं, *"सर्वोच्च अच्छाई... विज्ञानों में सबसे अधिक प्रामाणिक वस्तु होनी चाहिए - कुछ विज्ञान जो एक उत्कृष्ट शिल्प हो। लेकिन राजनीति का विज्ञान स्पष्ट रूप से ऐसा ही है, क्योंकि यह वही है जो निर्धारित करता है कि राज्यों में कौन से विज्ञान मौजूद रहेंगे, और नागरिकों के विभिन्न वर्गों को ज्ञान की कौन सी शाखाएँ सीखनी हैं, और किस हद तक।"*

उनका दृष्टिकोण दर्शाता है कि राजनीति विज्ञान अन्य सभी विज्ञानों पर हावी है। यह उनके **"उद्देश्यों के पदानुक्रम"** की व्याख्या करता है, जिसका अर्थ है कि ज्ञान की प्रत्येक शाखा केवल एक साधन है और अंततः एक अच्छा जीवन जीने के उद्देश्य की पूर्ति करेगी। यहाँ ध्यान

दें कि यूनानी दार्शनिक और राजनीति के बारे में उनका दृष्टिकोण एक समान धारणा साझा करते हैं। उनका मानना है कि राज्य जीवन के लिए अस्तित्व में आता है और अच्छे जीवन के लिए जारी रहता है। अरस्तू इस धारणा पर अलग नहीं हैं और इसलिए उन्हें राजनीति के विज्ञान को अन्य विज्ञानों से श्रेष्ठ माना जाता है।

## अरस्तू और राज्य पर उनके विचार

अरस्तू राज्य को स्वाभाविक मानते हैं। उनके अनुसार, राज्य सभी मनुष्यों के लिए एक आवश्यक शर्त है। प्लेटो की तरह, वे राज्य या समाज के बीच अंतर नहीं करते हैं और इसी तरह, इसे अच्छे जीवन के लिए आवश्यक मानते हैं। इस प्रकार, उनके विचार में, **राज्य एक अच्छे जीवन की एक आवश्यक शर्त है**।

कोई भी मनुष्य अकेले नहीं रह सकता, इसलिए एक पुरुष और एक महिला मिलकर एक परिवार बनाते हैं। जब एक परिवार अपना विस्तार करता है तो एक गांव बनता है और जब ऐसे कई गांव बनते हैं तो एक राज्य अस्तित्व में आता है। जब एक राज्य बनता है और समाज संगठित होता है, तो मनुष्य अपनी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है।

इसी कारण से राज्य का अस्तित्व उतना ही महत्वपूर्ण और स्वाभाविक है जितना कि परिवार या गांव का होना। हालाँकि, ज़्यादातर मानवीय संगठन त्रुटिपूर्ण होते हैं और अच्छे जीवन के एक या कुछ पहलुओं को पूरा करने में मदद करते हैं, लेकिन राज्य के लिए यह सच नहीं है। उन्होंने राज्य को अच्छे जीवन के पूरे या सभी पहलुओं को पूरा करने में सक्षम माना।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि उन्होंने राज्य को मनुष्यों के लिए स्वाभाविक क्यों माना। उनके अनुसार, एक जानवर और एक इंसान के बीच कोई अंतर नहीं है, सिवाय इसके कि एक इंसान में एक अच्छा जीवन जीने की इच्छा और भावना होती है। इसका मतलब यह है कि मनुष्य जानवरों से तभी अलग होता है जब वह एक अवस्था में रहता है। एक अच्छा जीवन जीने की यही इच्छा एक राज्य के निर्माण को एक स्वाभाविक चीज़ बनाती है।

## अरस्तू और मनुष्य पर उनके विचार

अरस्तू का मानना है कि **मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है**। यह सादृश्य इसलिए दिलचस्प है क्योंकि यह मनुष्य को न केवल एक सामाजिक प्राणी मानता है बल्कि उसे एक राजनीतिक प्राणी के रूप में भी व्याख्यायित करता है। अरस्तू अच्छे जीवन की इसी अवधारणा का उपयोग मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी के रूप में मानने के अपने विचार को सही ठहराने के लिए करते हैं। उनका दावा है कि सभी प्रकार के जीव समूहों में मौजूद होते हैं, और इस प्रकार, उन्हें सामाजिक प्राणी के रूप में समझा जा सकता है। हालाँकि, एक अच्छे और गुणवत्तापूर्ण जीवन की आकांक्षा करना पूरी तरह से मनुष्य का गुण है।

मनुष्य के लिए, संतुष्टि केवल जीवित रहने पर ही समाप्त नहीं होती; एक अच्छा जीवन जीने की निरंतर आकांक्षा उन्हें डिफॉल्ट रूप से राजनीतिक प्राणी बनाती है। वे कहते हैं, "जो राज्य में नहीं रहता या जिसे राज्य की आवश्यकता नहीं है, वह या तो जानवर है या भगवान"।

## राज्य और उसका मनुष्य के साथ संबंध

अरस्तू को उनके इस कथन के लिए जाना जाता है कि **राज्य मनुष्य से पहले है**। कालानुक्रमिक रूप से, यह मनुष्य ही है जो राज्य से पहले आता है। फिर भी, चूंकि यह राज्य ही है जो मनुष्य को अपनी ज़रूरतों को पूरा करने और अच्छे जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम बनाता है, इसलिए राज्य को मनुष्य से ज़्यादा प्राथमिकता दी जाती है।

मनुष्य के सामने राज्य कैसा है, यह समझने के लिए ओपी गौबा संपूर्ण और अंश का उदाहरण देते हैं। एक पैर या हाथ शरीर का अंग है, लेकिन शरीर के बिना एक पैर या हाथ बेकार है; राज्य के बिना एक व्यक्ति अधूरा है, और यह राज्य ही है जो उसे संपूर्ण बनाता है।

अरस्तू ने अंग और जीव के बीच संबंध स्थापित किया है। जीव का प्रत्येक अंग एक विशिष्ट कार्य करता है; प्रत्येक व्यक्ति समाज में अलग-अलग जिम्मेदारियाँ निभाता है। शरीर में अलग-अलग अंग होते हैं जो अलग-अलग कार्य करते हैं, और शरीर अपने कामकाज में सामंजस्य सुनिश्चित करता है। इसी तरह, राज्य विभिन्न व्यक्तियों के बीच सामंजस्य सुनिश्चित करता है, जहाँ श्रम का विभाजन समाज में सहयोग और सामंजस्य सुनिश्चित करता है।

## अरस्तू और उनकी सरकारों और संविधानों का वर्गीकरण

राजनीति विज्ञान के पिता का खिताब उनके नाम पर इसलिए पड़ा क्योंकि उन्होंने अपनी पद्धति के लिए अनुभवजन्य जांच का इस्तेमाल किया था। अरस्तू ग्रीक शहर-राज्यों की सरकारों में मौजूद अस्थिरता से परेशान थे। उन्होंने अपने छात्रों को विभिन्न संविधानों के केस स्टडी तैयार करने के लिए भेजकर विभिन्न शहर-राज्यों के 158 से अधिक केस इतिहास का अध्ययन किया। उन्होंने लगभग 160 केस इतिहास का विश्लेषण किया। सटीक रूप से कहें तो, ऐसा माना जाता है कि उन्होंने 158 केस इतिहास का विश्लेषण किया।

संविधानों के उनके वर्गीकरण को समझने के लिए एथेंस का केस इतिहास एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इस तथ्य को दो कारकों के आधार पर समझा जा सकता है:

1. **राज्य पर शासन करने वाले व्यक्तियों की संख्या:** क्या राज्य पर एक व्यक्ति शासन करता है, कुछ व्यक्ति शासन करते हैं या फिर कई लोग शासन करते हैं।

2. **शासक या शासकों का इरादा:** क्या शासक अपने राज्य के हित के लिए शासन कर रहा है (जिसे सरकार का सामान्य रूप कहा जाता है), या क्या शासक अपने स्वार्थ की देखभाल कर रहा है (जिसे सरकार का विकृत रूप कहा जाता है)।

अरस्तू का सरकार का वर्गीकरण		
	सार्वजनिक हित	स्वार्थी हित
एक	साम्राज्य	अत्याचार
कुछ	शिष्टजन	कुलीनतंत्र
अनेक	संवैधानिक लोकतंत्र	प्रजातंत्र

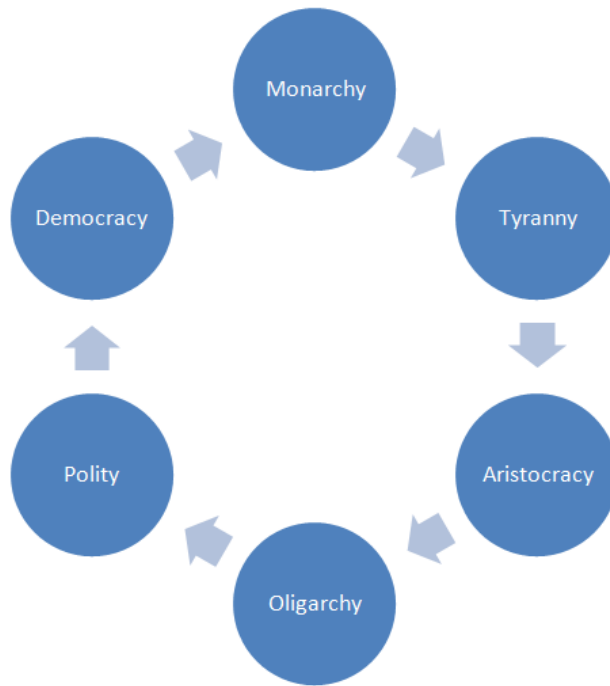
(स्रोत: [politicsscienceview.com](http://politicsscienceview.com))

- यदि यह एक का शासन है, तो यह आदर्श शासन प्रणाली में राजतंत्र या राजतंत्र होगा, अथवा विकृत रूप में निरंकुशता या अत्याचार होगा।
- यदि शासन कुछ लोगों द्वारा किया जाएगा, तो यह आदर्श शासन प्रणाली के रूप में अभिजाततंत्र होगा, या विकृत शासन प्रणाली के रूप में कुलीनतंत्र होगा।
- यदि शासन अनेक लोगों द्वारा किया जाएगा, तो शासन का आदर्श स्वरूप राजनीति या संवैधानिक सरकार होगी, और *दिलचस्प बात यह है* कि विकृत रूप में लोकतंत्र होगा।

अरस्तू के अनुसार, शासक की शक्ति पर किसी भी पर्याप्त नियंत्रण के बिना, सरकार का कोई भी रूप स्थिर नहीं होगा। उनका मानना है कि **शक्ति और गुण एक साथ नहीं रह सकते**।

उन्होंने समय के साथ सरकारों के परिवर्तन का चक्र प्रदान किया है। राजतंत्र, सरकार का एक सामान्य रूप है, जब राजा की शक्ति पर नियंत्रण नहीं होता है, तो वह अत्याचार में बदल जाता है। अत्याचार कुछ व्यक्तियों द्वारा विद्रोह या क्रांति की ओर ले जाता है जो अभिजात वर्ग की स्थापना करते हैं। अभिजात वर्ग बिगड़ सकता है और एक विकृत रूप, कुलीनतंत्र में बदल सकता है। समय के साथ, कुलीनतंत्र के खिलाफ बहुत से लोग विद्रोह करते हैं और इसे राजनीति से बदल देते हैं। लोकतंत्र में राजनीति और भी कमज़ोर हो जाती है जब कई शासक अपना स्वार्थ तलाशने लगते हैं। अंत में, एक व्यक्ति जो गुणी लगता है, एक राजतंत्र स्थापित करता है, और आदर्श रूप और विकृत रूप की प्रगति एक चक्रीय गति में जारी रहती है।

राजतंत्र >	अत्याचार >	अभिजात वर्ग >	कुलीनतंत्र >	राजनीति >	लोकतंत्र >
सामान्य	विकृत	सामान्य	विकृत	सामान्य	विकृत



## निष्कर्ष

अरस्तू ने ग्रीक शहर-राज्य में अस्थिरता को रोकने और सरकार का एक स्थायी रूप स्थापित करने के समाधान के रूप में **मिश्रित संविधान** की अवधारणा दी। उन्होंने स्थिरता बनाने के लिए **"गोल्डन मीन"** के अपने विचार को लागू किया। अपनी पुस्तक "एथिक्स" में, उन्होंने गोल्डन मीन को एक मध्य मार्ग के रूप में समझाया है, जिसका अर्थ है कि **गुण दो चरम सीमाओं के बीच स्थित है**। चरम छोर पर कोई भी चीज एक बुराई बन जाती है, और प्रत्येक गुण दो चरम सीमाओं के बीच में स्थित होता है। उदाहरण के लिए, साहस एक ऐसा गुण है जो डरपोकपन और लापरवाही के दो चरम सीमाओं के बीच स्थित है।

सरकार का एक स्थिर स्वरूप लाने के लिए उनका समाधान कुछ लोगों द्वारा शासन और बहुत से लोगों द्वारा शासन का संयोजन है। उन्होंने राजशाही को त्याग दिया क्योंकि यह पूर्ण शक्ति से भ्रष्ट होगा। अभिजात वर्ग उपयुक्त होगा क्योंकि कुछ ही लोग नियम बनाएंगे। इसमें चुने हुए अल्पसंख्यक शामिल होंगे जो शिक्षित और अमीर हैं। हालाँकि, अभिजात वर्ग पर कोई जाँच नहीं होने की स्थिति में, यह बिगड़ जाएगा। इसे रोकने के लिए, अरस्तू सुझाव देते हैं कि अभिजात वर्ग द्वारा लिए गए निर्णयों को आम लोगों द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए। वह कहते हैं

कि "लोग, हालांकि व्यक्तिगत रूप से वे विशेष ज्ञान रखने वालों की तुलना में खराब न्यायाधीश हो सकते हैं, सामूहिक रूप से उतने ही अच्छे हैं" ।

अभिजात वर्ग और जिसे कभी-कभी राजनीति या कभी-कभी लोकतंत्र कहा जाता है, के बीच विवेकपूर्ण मिश्रण का अरस्तू का सुझाव, गोल्डन मीन फॉर्मूले में उनके विश्वास को दर्शाता है। इसलिए, सक्षम, अमीर और शिक्षित लोग शासन करेंगे, लेकिन आम नागरिक उनके निर्णयों की पुष्टि करके अभिजात वर्ग को उनकी शक्ति से आगे बढ़ने से रोकेंगे। **आधुनिक समय में, अरस्तू के फॉर्मूले को यकीनन संवैधानिक लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है।**